प्रांजल

हिंदी पाठमाला

8

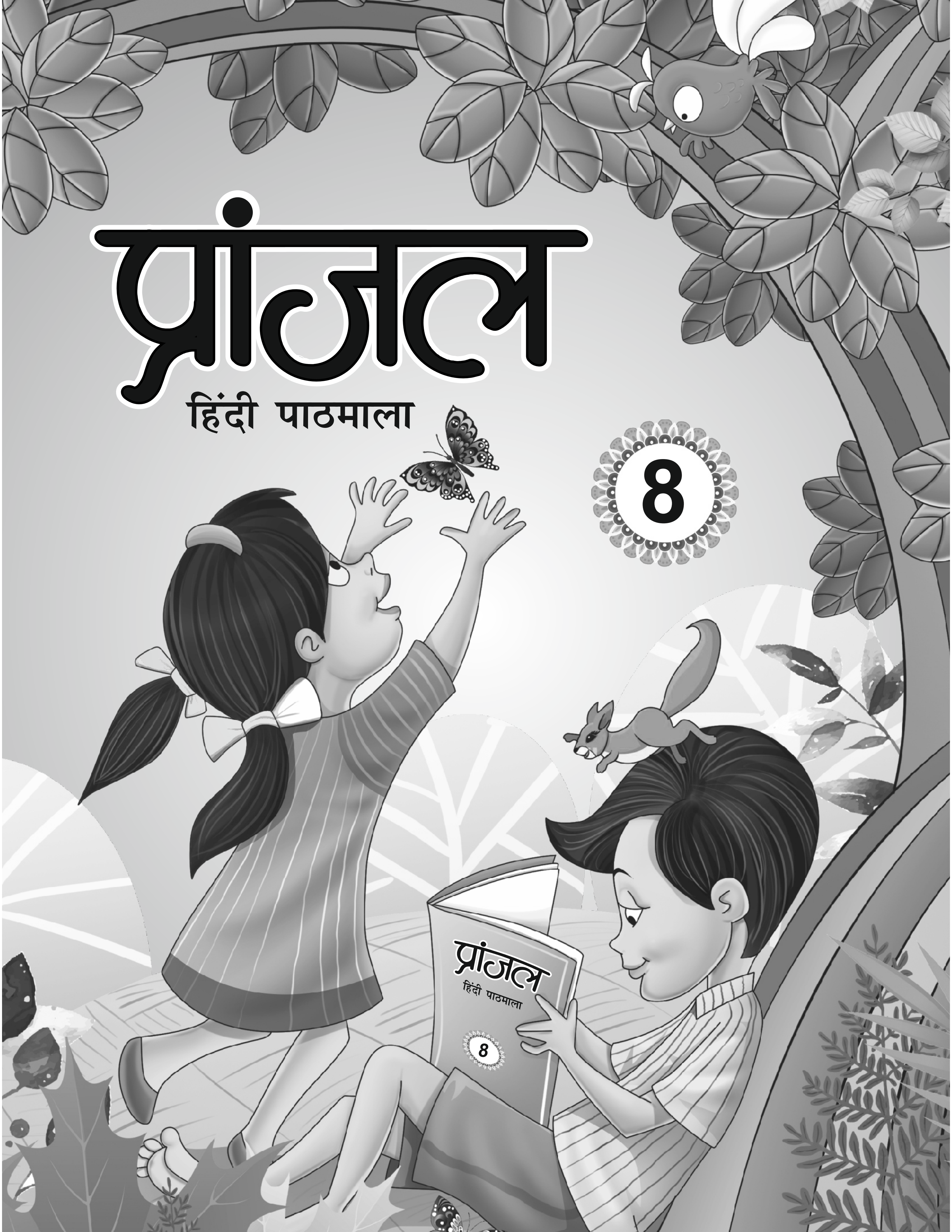

1. वर दे, वीणावादिनि!

• **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (iii) सरस्वती
2. (ii) नव
3. (iv) नवल कंठ
4. (iv) सरस्वती

(ख) 1. कवि माँ सरस्वती से प्रार्थना कर रहा है।
2. कवि की अभिलाषा है कि माँ सरस्वती अज्ञान से भरे हृदय के बंधन को काट दे और अपने ज्ञान का झरना बहा दे। हृदय की कलुषता (कड़वाहट), भेदभाव, अंधकार (अज्ञान) को मिटा दे और प्रकाश (ज्ञान) का उजाला विश्व में कर दे आशय है कि अज्ञान को मिटाकर संसार में उजाला कर दे।
3. उपर्युक्त काव्यांश में हृदय के लिए उर शब्द का प्रयोग किया गया है।
4. काव्यांश के रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं।

(ग) 1. वीणा बजाने वाली माँ सरस्वती हैं जिन्हें बुद्धि, ज्ञान और कला की देवी माना गया है।
2. हे वीणा बजाने वाली माँ सरस्वती हृदय के अज्ञान को मिटाकर उसके स्थान पर ज्ञान का आलोक कर दो। अपने ज्ञान के प्रकाश से सम्पूर्ण विश्व को आलोकित कर दो।
3. भारत में स्वतंत्रता की ध्वनि (भावना) एवं कल्याणकारी मंत्र की नवभावना भर दे जिससे भारत में जनजागृति आये आशय यह है कि माँ भारतवासियों में स्वतंत्रता की भावना जगा दे।

(घ)

स्वतंत्र रव	अंध उर	विहग वृंद
ताल छंद	बंधन स्तर	जलद मंद्र

(ङ)

चाल	महादेव
पिछला	पराजय
बादल	देवता
शीघ्रता	ध्वनि या आवाज़

• **भाषा कौशल**

(च)

ज्योतिर्मय	–	ज् + य् + ओ + त् + इ + र् + म् + अ + य् + अ
निर्झर	–	न् + इ + र् + झ् + अ + र् + अ
निर्भय	–	न् + इ + र् + भ् + अ + य् + अ
निर्धन	–	न् + इ + र् + अ + ध् + अ + न् + अ

(छ) 1. हृदय
2. अंधकार उजाला

3. संसार

4. आकाश   पंछी

- **विचार कौशल**

(ज) स्वतंत्र होने की अभिलाषा 1857 के विद्रोह के पश्चात बलवती हो उठी।
बंधन खोलकर सभी कबूतर आज़ाद हो गये।
प्रकाश के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती।
गति से ही जीवन में समृद्धि आती है।
स्वर का ज्ञान होना आवश्यक है।

- **कला समन्वय**

छात्र स्वयं करें।

❑

2. जामुन का पेड़

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) जामुन
2. (iii) जामुन का पेड़ एक फलदार पेड़ है।
3. (iii) पेड़ के नीचे दबा हुआ आदमी एक कवि था।
4. (iii) विदेश विभाग
5. (iii) साहित्य अकादमी

(ख) 1. माली ने क्लर्क से
2. एक मनचले ने ऑफिस के लोगों से
3. दबा आदमी माली से
4. साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी दबे आदमी से

(ग) 1. **सप्रसंग व्याख्या-** एक मनचला दबे व्यक्ति को उत्तर देता हुआ कहता है कि आपको मालूम नहीं है कि आजकल प्लास्टिक सर्जरी कितनी तरक्की कर चुकी है अर्थात् वो कितनी क्षमता हासिल कर चुकी है। मेरे विचार में इस आदमी को बीच से काटकर निकाल लिया जाये तो इसे दोबारा जोड़ा जा सकता है।

2. **सप्रसंग व्याख्या-** सुपरिटेंडेंट कवि, दबे व्यक्ति से कहता है कि प्रधानमन्त्री ने इस पेड़ को काटने का आदेश दे दिया है। कल यह पेड़ काट दिया जायेगा और तुम इस मुसीबत से निकल जाओगे लेकिन कवि का हाथ ठण्डा था और पुतलियाँ निर्जीव थी आशय यह है वह मर गया था। चींटियों की लम्बी कतार उसके मुँह में जा रही थी। उसका जीवन समाप्त हो चुका था।

(घ) 1. दबा हुआ आदमी एक कवि था। उसे माली ने भोजन कराया।

2. जब लोगों को पता चला तो कविगण एकत्रित हो गये और कवि सम्मेलन-सा वातावरण हो गया।

3. साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी ने भी उसके साथ वैसा ही, नौकरशाही जैसा व्यवहार किया जैसा अन्य विभागों के कर्मचारियों व अधिकारियों ने किया।

4. विदेश विभाग आज शाम चार बजे पेड़ की फाइल को प्रधानमंत्री के सामने पेश करेगा। वे जैसा निर्णय देंगे वह सभी को मान्य होगा।

5. एक दबे व्यक्ति को पेड़ से न निकालने के प्रसंग से नौकरशाही की अकर्मण्यता प्रकट होती है।

- **भाषा कौशल**

(ङ) उसका पता बड़ी कठिनाई से मिला। (वाच्यार्थ)
वो इतना मूर्ख है मुझे पता नहीं था। (लक्ष्यार्थ)
रसीली रसभरी खाकर मन प्रसन्न हो गया। (वाच्यार्थ)
उसकी रसिक बातों से सब प्रसन्न हो गये। (लक्ष्यार्थ)
पौधे का तना मज़बूत होना चाहिए। (वाच्यार्थ)
विराट का तना चेहरा देख खिलाड़ी शांत बैठ गये। (लक्ष्यार्थ)
फल खाने से आदमी स्वस्थ रहता है। (वाच्यार्थ)
गीता का संदेश कर्म करो फल की इच्छा मत करो। (लस्यार्थ)

(च)	छात्रवृत्ति	मुक्ति	नष्ट
	उपस्थित करना	आदेश	निर्णय

(छ)	विभाग + इय	विभागीय
	साहित्य + इक	साहित्यिक
	सफल + ता	सफलता
	सम्बन्ध + इत	सम्बन्धित

- **विचार कौशल**

(ज) 1. इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि संकट में पड़े व्यक्ति की जान बचाना सबसे जरुरी है। कानूनी कार्यवाही उसके बाद की बात है। यदि हम आदमी को न बचा पाये तो बाकी बातें बेमानी हैं।

2. भ्रष्टाचार देश को दीमक की भाँति चाट रहा है। जो नेता भ्रष्टाचार समाप्त करने की बात करते हैं वे स्वयं भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाते हैं। माता-पिता भी यह भूल जाते हैं कि एक सरकारी क्लर्क इतना पैसा कहाँ से ला रहा है जबकि इसकी पगार तो इतनी कम है। यदि माता-पिता अपने बच्चों को सिखायें कि रिश्वत लेना पाप है, गुरुजन भी उसे ऐसा सिखायें तो बच्चा ईमानदार बने, पर ऐसा नहीं हो रहा है। यही कारण है कि भ्रष्टाचार हमारे देश में फैला हुआ है। इसी भ्रष्टाचार के कारण सरकार द्वारा चलाये जनकल्याणकारी कार्यक्रमों को पलीता लग जाता है और वे भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

सरकारी विभागों के कर्मचारियों की लापरवाही और अपना उत्तरदायित्व एक दूसरे पर टालने से आम आदमी के काम अधर में लटक जाते हैं। हारकर वह रिश्वत देकर अपना काम कराता है तो वह काम तुरंत हो जाता है।

विजीलेंस डिपार्टमेंट रिश्वत लेने वालों को इंगित कर कठोर कार्यवाही करे। किसी भी कार्य-निस्तारण का एक निश्चित समय हो। एक बाबू एक फाइल को एक हफ्ते से अधिक न रख पाये। अधिकारी को नियत समय में कार्य कराने का उत्तरदायी बनाया जाये। समय पर कार्य न करने वालों के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही होनी चाहिए।

❑

3. घाट बाबू

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (i) घाट बाबू भी महात्मा बुद्ध की तरह सुख-सम्पन्न पिता के पुत्र थे।

2. (iii) लेखक

3. (iii) नौकरी के लिए

4. (iii) आठ वर्ष

5. (ii) घाट बाबू

(ख) अनादि ने आठ वर्ष की आयु में टाल्सटाय को चिट्ठी लिखी थी। अत: महान लेखक टाल्सटाय अनादि को सम्बोधित करते हुए लिखते हैं, तुम्हारी लेखक बनने की बड़ी अभिलाषा है इसका अर्थ ये है कि तुम विश्व में ख्याति अर्जित करना चाहते हो। मानव की यह पहली और प्रधान इच्छा होनी चाहिए कि वह किसी को अपशब्द नहीं कहेगा, रुखा व्यवहार नहीं करेगा, किसी को दोषी नहीं ठहराएगा, किसी को हानि नहीं पहुँचाएगा, सबसे प्रेम करेगा। आशय यह है कि मानव ने जीवन का लक्ष्य सज्जन और परोपकारी बनना होना चाहिए।

(ग) 1. अनादि बड़ा होकर लेखक बनना चाहता है। उसके विचार में लेखक बनने के लिए अच्छा पाठक होना जरूरी था।

2. टाल्सटाय के पत्र का अनादि पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने लिखना छोड़ दिया और मध्य प्रदेश के एक गाँव आकर घाट बाबू हो गये।

3. गाँव के अध्यापक ने टाल्सटाय के जीवन की वह घटना सुनकर जिसमें वह आठ वर्षीय बच्चे की चिट्ठी का उत्तर देते हैं, सुनकर लेखक बनने की इच्छा को त्याग दिया और छोटे से गाँव में स्कूल मास्टर बन गये।

4. घाट बाबू अनादि को कहा गया है जो मुफ्त में सबको नदी पार कराते हैं। उन्होंने गाँव में अपने पैसों एक स्कूल, आदिवासी बच्चों के लिए एक लाइब्रेरी, एक अस्पताल जिसमें दवा ही नहीं बीमारों के लिए भोजन की भी व्यवस्था है।

5. जीवन का उद्देश्य मात्र अपने उत्थान से नहीं सामूहिक उत्थान से है जिसमें सबकी खुशी हो।

6. लेखक ने घाट बाबू की तुलना महात्मा बुद्ध से इसलिए की क्योंकि बुद्ध एक राज परिवार के थे उन्होंने जीवन के सत्य की खोज के लिए गृह त्याग दिया था और संन्यासी हो गए उसी प्रकार घाट बाबू भी एक करोड़पति के पुत्र थे।

• **भाषा कौशल**

(घ) नियम — होशियारी
शान्ति — व्यवसाय
घमण्ड — लघुता
धन — श्रद्धा

(ङ) 1. वह तेज दौड़ता है।
2. शेर धीरे-धीर आगे बढ़ता है।
3. हमें यहाँ से आगे जाना है।
4. वह प्रतिदिन पूजा करता है।
5. मयंक धीरे चलता है।

2. छात्र स्वयं करें।

(च) 1. अनादि ने तब मेरी ओर देखा और पहचानकर कहा ''अरे तू?''
2. दूर-दूर से उस लड़के और चिट्ठी को देखने लोग आने लगे।
3. मैं दिन में नौकरी करूँगा और बाकी समय लिखँगा।
4. धीरे-धीरे हम स्कूल से कॉलेज और फिर एक दिन यूनिवर्सिटी पहुँच गये।

• **विचार कौशल**

(छ) प्रेमचंद मेरे प्रिय लेखक हैं। उनका लेखन पढ़कर अनुभूति होती है कि हम उसे सचित्र देख रहे हैं। किसान, मजदूर, दलित, अल्पसंख्यक एवं शोषित जन को ऐसी झाँकी विश्व के साहित्य में भी देखने को नहीं मिलती। वे समाज-सुधारक भले न हों मगर कबीर की भाँति युग दृष्टा और उद्धारक अवश्य थे।

❑

4. शक्ति और क्षमा

• **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) दुर्योधन
2. (i) विषधर सर्प
3. (iii) समुद्र
4. (iii) दुर्योधन
5. (ii) रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ख) 1. ये पंक्तियाँ भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं।
2. अर्जुन सहित पांडवों ने क्षमा, दया, तप और त्याग का सहारा लिया।
3. सुयोधन नर होकर भी व्याघ्र के समान शक्तिशाली, अहंकारी और जिद्दी था। मानवीय मूल्यों की उसके लिए कोई अहमियत नहीं थी।
4. सुयोधन को हम दुर्योधन के नाम से पुकारते हैं।

(ग) 1. कौरवों ने पांडवों की क्षमाशीलता को कायरता समझा इसलिए उन्हें दुष्ट कहा गया।
2. राम सिंधु से समुद्र पारकर लंका में जाने का रास्ता माँग रहे थे।
3. सिंधु ने राम के चरणों की पूजा करके दासता स्वीकार की।
4. सहनशीलता, दया आदि शक्तिशाली को शोभा देती है।
5. मानवीय मूल्य दया, क्षमाशीलता, तप, त्याग शक्तिशाली को शोभा देते हैं कायर को नहीं।

(घ) 1. वास्तव में विनती की आभा बाण में ही रहती है आशय यह है कि विनती भी उसी की फलीभूत होती है जिसके पास बाण की शक्ति है अर्थात् विनय भी शक्तिशाली को शोभा देती है।
2. सहनशीलता, क्षमा और दयालुता को संसार में तभी पूजा जाता है जब उसके पीछे शक्ति का अहंकार दृष्टिगोचर होता है अर्थात् जब व्यक्ति शक्तिशाली होता है तभी मानवीय मूल्य सहनशीलता, क्षमा और दयालुता उसे शोभा देते हैं। कायर और शक्तिहीन के लिए उनका कोई महत्त्व नहीं।

- **भाषा कौशल**

(ङ) अहि, विषधर, उरग
हलाहल, गरल, कालकूट
मानव, पुरुष, जन
जलधि, वारिधि, उदधि

(च)	क्रूर	वीर
	बलहीन	मित्र
	कठिन	निर्बल
(छ)	दयावान	शरणागत
	क्षमाशील	त्यागी
(ज)	उत्तर	पश्चात
	अपनाना	ग्रहण (सूर्य)
	पैर	अवस्थिति
	मेल	जोड़
(झ)	शरा-सन	प्रश्न-उत्तर
	बल-वान	राम-सीता

(ञ) छात्र शब्दों पर ध्यान दें और समझें।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

- **कला समन्वय**

छात्र स्वयं करें।

❑

5. महायज्ञ का पुरस्कार

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (iii) कुंदनपुर
2. (ii) कुत्ता
3. (ii) सेठानी ने
4. (ii) सेठ
5. (iii) कुत्ते को

(ख) 1. सेठ कुंदनपुर जा रहे थे। जहाँ एक धन्ना सेठ रहते थे।
2. पसीने से देह लथपथ हो गई और भूख सताने लगी।
3. पोटली में चार मोटी रोटियाँ थी।
4. नहीं, वे भोजन और विश्राम नहीं कर पाए।

(ग) 1. सेठ ने जरूरत मंदों, माँगने वालों और यज्ञों के द्वारा अपने धन का उपयोग किया।
2. सेठ की हालत पतली हो गई, रोटी के भी लाले पड़ गए अतएव यज्ञ बेचने की नौबत आ गई।
3. कुंदनपुर में एक सेठ थे जो धन्ना सेठ कहलाते थे। सेठानी तीनों लोकों की बात जान लेती थी।
4. सेठ ने अपनी चारों रोटियाँ भूखे होने के बावजूद कुत्ते को खिला दी।
5. उन्होंने नि:स्वार्थ भाव से यह कार्य किया था। उनकी इससे प्राप्ति की कोई इच्छा नहीं थी।
6. विपत्तियों से घिरे होने पर भी सेठ ने धर्म नहीं छोड़ा।
7. सेठ सेठानी को घर में एक तहखाना मिला जो जवाहरातों से जगमगा रहा था।

(घ) 1. सेठ गरीब हो गये, रोटी के भी लाले पड़ गये।
2. भूखे को रोटी देना सबकी जिम्मेदारी है इसमें त्याग की कौन-सी बात है अर्थात् भूखे को खिलाना सबका कर्त्तव्य है, उसमें त्याग वाली कोई बात नहीं है।

- **भाषा कौशल**

(ङ) सेठानी — पड़ोसन

(च) पोटली-स्त्रीलिंग — पानी - पुल्लिग
प्रकाश-पुल्लिग — रोटी - स्त्रीलिंग

(छ) विपरीतार्थी शब्द युग्म — छोटा-बड़ा, हाथ-पैर, जैसे-तैसे, झूठ-सच
समानार्थी शब्द-युग्म — संगी-साथी, सोच-विचार, लोटा-डोर, दीन-दुखी, चलने-फिरने
पुनरूक्त शब्द-युग्म — टुकुर-टुकुर, दूर-दूर, गिरते-गिरते, बड़ी-बड़ी, करते-करते

- **विचार कौशल**

(ज) 1. दिया
2. हुए

3. पाऊँगा

4. मिला

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

- **कला समन्वय**

छात्र स्वयं करें।

❑

6. दो कलाकार

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) नया चित्र

2. (iii) बस्ती के गरीब बच्चे

3. (i) रुकना

4. (iii) चित्रा को

5. (iv) भिखारिन

(ख) 1. यह बात अरुणा, चित्रा से कह रही है कि वह बेवजह ऐसे उल-जलूल चित्र बनाकर जिसे देख कुछ समझ नहीं आता अपना जीवन बर्बाद कर रही है।

2. चित्रा, अरुणा से विदेश जाने की बात कहती है तो अरुणा चित्रा से कहती है वह कला किस काम की जो इंसान को इंसान न रहने दे अर्थात् वह मात्र कलात्मक चित्र में उलझ जाये उसे मानवता से कोई सरोकार ही नहीं रहे।

3. यह बात चित्रा अपनी मित्र अरुणा से कहती है कि भिखारिन मर गई और उसके दो बच्चे उससे चिपक कर रो रहे थे। उस दृश्य में न जाने क्या अजब बात थी कि वो खुद को रोक न सकी और उसका एक स्केच बना दिया।

4. भिखारिन की बच्ची जो अब अरुणा ने पाल ली थी चित्रा से पूछती है, मौसी क्या ये वास्तव में बच्चे थे?

(ग) 1. अरुणा और चित्रा दोनों सहेलियाँ हैं।

2. अरुणा जनसेवा के कार्यक्रमों में व्यस्त रहती थी।

3. चित्रा और अरुणा दोनों अपने कार्यों के प्रति लगन, निष्ठा और जुनून रखती थी। चित्रा को चित्रकारी और अरुणा को समाज सेवा से प्रेम था।

4. चित्रा के विदेश जाने का उद्‌देश्य चित्रकारी में पारंगत होना था।

5. चित्रा के मरी भिखारिन और उसके दोनों बच्चों का उससे चिपटकर रोने वाले कारूणिक चित्र की अत्यधिक सराहना हुई। चित्रा ने स्वयं इस दृश्य को देखकर उसका कच्चा स्केच बना लिया था।

6. वह उन बच्चों के उद्धार में व्यस्त थी जिनका स्केच चित्रा ने बनाया था।

7. चित्रा एक अच्छी चित्रकार है, उसमें सामाजिक सरोकार की भावना नहीं है उसे केवल अपने चित्रों की अच्छाई और लोकप्रियता से मतलब है जबकि अरुणा एक

संवेदनशील और दीन-दुखियों से सच्चा प्रेम करने वाली लड़की है। उसने भिखारिन के मरने के बाद उसके दोनों बच्चों को अपना लिया। अत: अरुणा महान कलाकार है।

- **भाषा कौशल**

(घ) कन्फ्यूजन, ड्राम, बस, मोटर, कोर्स, हॉस्टल, स्टोर, कॉलम।

(ङ) 1. सरल वाक्य- (i) आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है?
(ii) अरे जनाब यह चित्र आज की दुनिया में कन्फ्यूजन का प्रतीक है।

2. संयुक्त वाक्य- (i) बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन और ज्ञान की छाप लगायी।
(ii) बाढ़ पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती थी।

3. मिश्रित वाक्य- (i) मुझे तो तेरे दिमाग के कन्फ्यूजन का प्रतीक नजर आ रहा है, बिना मतलब जिन्दगी खराब कर रही हैं।
(ii) जो दृश्य वह अपनी आँखों से देखकर आ रही थी, वैसे ही दृश्य यहाँ भी अंकित थे।

(च) दु: + गुण दु: + लभ
नि: + आहार नि: + जन
नि: + आमिष पुन: + जन्म
आशी: + वाद अन्त: + गत

- **विचार कौशल**

यदि मैं एक कलाकार होता तो देश में बढ़ती मँहगाई, बेरोजगारी, कुपोषण, गरीबी, सामाजिक घृणा, जाति-वाद, ऊँच-नीच, भ्रष्टाचार, लालफीताशाही और व्यक्तिवाद जैसी समस्याओं पर चित्र बनाता।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

7. स्नेह

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (i) शशि को
2. (ii) रसगुल्ला
3. (iii) श्यामा
4. (i) निरुपमा
5. (i) उमा को

(ख) 1. शशि बहुत बीमार था। उसकी खबर भी श्यामा से लगी थी। उमा उसकी चिन्ता में व्याकुल हो गई।

2. उमा ने अशोक को उठाकर जो उसका स्वयं का पुत्र था और रुंधे गले से कहा जीजी! इसे खाकर अपनी आग शांत कर लो और मेरे शशि को मुझे दे दो।

3. उमा की बात सुनकर जिसमें वह अशोक को उसके चरणों में रख देती और शशि को देने की बात कहती है उससे निरुपमा बुत-सी बन गई। निरुपमा शशि की ताई थी।

4. उमा, शशि के प्रति निरुपमा के अत्यन्त खराब बर्ताव से क्रोधित थी, वह सोचती थी कि निरुपमा शशि को मार डालेगी।

5. बुत का अर्थ है निर्जीव हो जाना।

(ग) 1. शशि निरुपमा के देवर देवरानी का बेटा था।

2. उमा को शशि के कमरे के बाहर खड़ा देखकर निरुपमा ने चिल्लाकर कहा कि जो जान-बूझकर साँप के मुँह में उँगली डालता है उसे कौन बचा सकता है। बहूरानी तुम शशि को मुँह न लगाओ।

3. निरुपमा के हृदय में यह भय था कि कोई शशि को उससे छीन न ले, कोई उसे प्यार न करें। वह उसके देवर का लड़का था।

4. शशि बहुत भूखा था उसे एक दिन पहले निरुपमा ने रोटी नहीं दी थी।

5. अमूल्य ने घर बदल दिया और पास ही में दूसरे घर में चला गया।

6. अपनी संतान से ज्यादा कुछ नहीं होता इस बात को निरुपमा समझे, जबकि शशि तो निरुपमा का अपना बेटा भी नहीं था। वो उस पर प्रेम का एकाधिकार कैसे रख सकती है? कैसे उस पर अत्याचार कर सकती है?

(घ) निरुपमा, उमा से कहती है तुम शशि को प्यार न करो आशय यह है कि उस पर केवल उसका एकाधिकार है, वह नहीं चाहती कि कोई शशि को प्यार करे।

(ङ) 1. ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ

2. द् + ऋ + ष् + ट + इ

(च) कक्ष - क् + अ + क् + ष् + अ

संज्ञाहीन - स् + अ + न् + ज् + न् + आ + ह् + ई + न् + अ

त्रस्त - त् + र् + अ + स् + त् + अ

(छ) अनुपमेय

विधवा

विधुर

अमूल्य

अभागा

बुद्धिभ्रष्ट

- **विचार कौशल**

(ज) 1. छात्र पुस्तक के शब्दों को समझें।

2. 1. मैं कहती हूँ, उमा, तुम इस बालक से दूर ही रहना, ताई चिल्लाई।

2. कितना प्यारा बच्चा है। न जाने यह रोता क्यों रहता है?

3. ओह! "कितना मारा है बेचारे नन्हें बच्चे को?" उमा ने कहा।

4. अमूल्य बोले, "उमा तुम भाभी को नहीं जानतीं।"

5. उमा, शशि को गोद में लिए, जल्दी-जल्दी घर आ गई, उसने पीछे मुड़कर भी न देखा।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

- **कला समन्वय**

छात्र स्वंय करें।

❑

8. गिरिधर की कुण्डलियाँ

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) दौलत को

2. (iii) गुणवान

3. (i) दूसरों की हँसी का पात्र बनना

4. (ii) मीठे वचन

5. (ii) घमण्ड

(ख) 1. नाव में पानी भर जाये तो उसे बर्तन या हाथों से बाहर निकाल देना ही बुद्धिमानी का काम है।

2. अच्छा आचरण रखिये जिससे आपका सम्मान बरकरार रहे।

3. किसी काम पर बिना सोच-विचार के कार्य करना संसार में अपनी खिल्ली उड़वाना है अर्थात् प्रतिष्ठा को गिराना यही बात हृदय में खटकती रहती है कि बिना सोच-विचार कार्य क्यों किया?

4. धन चार दिन के मेहमान की तरह सबके यहाँ रहता है अर्थात् धन की प्रवृत्ति चलायमान है कभी यहाँ, कभी वहाँ।

(ग) 1. सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को एक रंग, काग सब भए अपावन।।

2. दौलत पाय न कीजै, सपने हू अभिमान।
चंचल जल दिन चारि को, ठाऊँ न रहत निदान।।

(घ) 1. सम्मान व आदर पाने के लिए मनुष्य को अच्छा आचरण करना जरूरी है।

2. परोपकार के लिए स्वयं आगे बढ़कर कार्य करना चाहिए।

3. किसी भी काम को करने के लिए पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लेना चाहिए।

4. बिना सोचे-विचारे कोई कार्य करने से संसार में मज़ाक बन सकता है, लोग हँसेंगे।

5. कवि धन से भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण मीठे वचनों को सुनना मानता है, सबसे विनम्रता से बोलना चाहिए। विनम्रता से सबको अपना बनाना चाहिए।

6. लक्ष्मी चंचल होती है जो एक स्थान पर नहीं टिकती है, आज यहाँ, कल वहाँ।

- **भाषा कौशल**

(ङ) 1. सबद सुनै सब कोय

2. यही सयानो काम

3. जग में होत हँसाय

4. ठाऊँ न रहत निदान

(च) **खग जाने खग की भाषा**—पक्षी ही पक्षी की भाषा जानते हैं अर्थात् एक-सा काम करने वाले लोग एक दूसरे के हाव-भाव और तौर-तरीकों को जानते हैं।

दैव-दैव आलसी पुकारा—आलसी कोई काम नहीं करते हैं और ईश्वर को पुकारते रहते हैं।

बिनु सत्संग विवेक न होई—सज्जन लोगों की संगति के बिना विवेक जाग्रत नहीं हो सकता अर्थात् अच्छे बुरे की समझ विकसित नहीं हो सकती है।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत—मन ही यदि हार मान ले तो व्यक्ति हार जाता है और मन जीत मान ले तो व्यक्ति जीत मान लेता है।

सूरदास खल कारी कामरि चढ़े न दूजा रंग—सूरदास जी कहते हैं कि काले रंग के केबल पर कोई दूसरा रंग नहीं चढ़ता अर्थात् हरि से विमुख हुए व्यक्ति का स्वभाव भी इस तरह का होता है।

(छ) **कोकिला** — पिक सारिका

पानी — सलिल तोय

नाव — नौका तारिणी

निशि —रात रात्रि

दौलत — अर्थ धन

पाहुन — आगंतुक अभ्यागत

- **विचार कौशल**

(ज) छात्र स्वयं करें।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

- **कला समन्वय**

छात्र स्वयं करें।

❑

9. पुरस्कार

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) वह अपने पूर्वजों की भूमि बेचना नहीं चाहती थी

2. (i) दक्षिणी नाले के समीप की जंगली भूमि

3. (iii) प्राणदण्ड

4. (ii) सिंहमित्र

5. (iv) दो सौ सैनिक

(ख) 1. किसान

2. अपराध

3. अनुग्रह

4. प्रहरी

5. पुरस्कार

	किसने	किससे
(ग)	1. वृद्ध मंत्री	मधूलिका से
	2. मधूलिका	मगध के राजकुमार से
	3. महाराजा	मधूलिका से

(घ) 1. वह दूसरों के खेतों में काम करती, कठोर परिश्रम से जो अन्न मिलता उसे खाकर अपनी झोंपड़ी में रहती।

2. राजकुमार ने स्वयं को मगध का विद्रोही, निकाला गया राजकुमार और कोशल में जीविका की तलाश में आने वाला बताया है।

3. वह भूमि नाले के और दुर्ग के समीप थी। भूमि ऊबड़-खाबड़ थी जिसे देने में राजा को संकोच भी नहीं होगा।

4. वह अपने कोशल के प्रति भक्ति और प्यार रखती थी। एक ओर उसका साथी विद्रोह मगध राजकुमार और दूसरी ओर कोशल का प्यार था। अत: उसमें मातृभूमि के प्रति अटूट निष्ठा थी।

5. राजकुमार ने अपनी आक्रमणकारी योजना मधूलिका को बता दी थी वह भी इस षड्यन्त्र में शामिल थी।

- **भाषा कौशल**

(ङ) सम्बन्ध कारक, अधिकरण कारक, सम्प्रदान कारक

(च) 1. उत्तर का विशाल मैदान बहुत उर्वर है।

2. पश्चिमी भारत में मुम्बई एक प्रमुख महानगर है।

(छ) हर्ष - आह! हम मैच जीत गये।

शोक - हाय! मैं उसे बचा ना सका।

घृणासूचक - छी! वो उसे नोचकर खा रहा है।

(ज)	अश्व + अरोही	वसन्त + उत्सव
	प्रति + एक	सदा + एक

- **विचार कौशल**

(झ) छात्र स्वयं करें।

- **कला समन्वय**

छात्र स्वयं करें।

❑

10. अधिकार का रक्षक

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) वे बहुत अनुशासनप्रिय और कठोर स्वभाव के थे।
2. (iv) एक सहायक सम्पादक का प्रबन्ध करें।
3. (iii) श्रीमती सेठ
4. (i) सम्पादक से
5. (iv) श्रीमती सेठ

(ख) (कर्कश आवाज़ में) हेलो, हेलो। ओहो! श्रीमती सरला देवी!
आवाज़ में मधुरता लाते हुए .... उम्मीदवारों में और कोई न मिलेगा....
सेठ (क्रोध से) ठहर मूर्ख .... इधर मत आना।
सेठ—(क्रोध से) इन्हें सँभालकर ...... न आया करो।

(ग) रामदेई, सेठ से
भगवती, सेठ से
श्रीमती सेठ, सेठ से
सम्पादक, सेठ से

(घ) 1. सेठ जी ने उससे मज़दूरों की दशा सुधारने के प्रयास की बात कही। उनकी एक-एक माँग पूरी करने की बात पूरी करायेंगे। ये भी वादा किया काम के घण्टे तय होंगे और तनख्वाह भी पूरी...।
2. सेठ छात्र के बयान को सम्पादक को देने को कहते हैं और बाद में सम्पादक से बयान को छापने को मना कर देते हैं क्योंकि प्रिंसिपल उनके कृपालु और कमेटी सदस्य मित्र हैं।
3. सेठ जी फोन पर किसी से उक्त कथन कहते हैं।
4. सेठ जी की कथनी और करनी में अन्तर है। सेठ जी अपने कृपालुओं और मित्रों का विशेष ध्यान रखते हैं।
5. हर नेता चुनाव से पहले स्वयं को जनता के अधिकार का रक्षक बताता है (यदि वह जीत गया तो जनता के अधिकार का रक्षक बनेगा) अत: नाटक के नाम की सार्थकता स्वत: प्रमाणित है।
6. सेठ जी के सब कार्य वास्तविक 'अधिकार के रक्षक' के लिहाज से नकारात्मक हैं। वह केवल ढकोसले में यकीन रखकर स्वार्थ को देखते हैं।

- **भाषा कौशल**

(ङ) वर्तमान काल — उठाने में, करता, माँगता, सकतीं, होता,
भूतकाल — किया, दिया, किये, हुआ, पड़ा
भविष्यत्काल — दूँगा, आऊँगा, जाऊँगा, करूँगा, करवाऊँगा

(च) उप + स्थित — उपस्थित　　उप + हार — उपहार
उप + कार — उपकार　　उप + अर्जन — उपार्जन
उप + आयुक्त — उपायुक्त

(छ)

श्रीमती	छात्र	नौकरानी
सदस्या	मज़दूर	सम्पादक
सेविका	सहायिका	नायक

- **विचार कौशल**

(ज) छात्र स्वयं करें।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

11. खिलौना

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) सोने के
2. (ii) दास-दासियाँ
3. (iii) मिट्टी के

(ख) 1. अपने बालक के रोने से जो कि राजकुमार की तरह सोने का खिलौना माँग रहा था।
2. दीना का बेटा सोने का खिलौना चाहता था।
3. माँ उसे यह कहकर बहलाने की कोशिश कर रही है कि सोने का खिलौना तो राजा के घर भी नहीं है।
4. लाल पुत्र को कहा जाता है और लाल रंग भी होता है।

(ग) 1. बच्चा राजकुमार के सोने के खिलौने और राजकुमार बालक के मिट्टी के खिलौने को लेने की ज़िद करते हैं।
2. बालक ने सोने का खिलौना लेने की जिद में अपना मिट्टी का खिलौना, मिट्टी में फेंक दिया।
3. राजकुमार को मिट्टी का खिलौना पसंद आया।
4. (अ) दास-दासियाँ राजकुमार को समझाते हैं जिस खिलौने से रास्ते में बालक खेल रहा था, वह तो मिट्टी का होगा तुम तो सोने के खिलौने से खेलो।
(ब) जिद्दी राजकुमार ने अपने सभी चाँदी और सोने के उपहार फेंक दिये।

- **भाषा कौशल**

(घ) माँ — जननी, माता　　पथ — रास्ता, राह
राजा — नृप, महीप　　स्वर्ण — सोना, कुंदन

(ङ) खिलौना　　व्यथित
निर्माणित　　बेचारी

(च) स्वर्णनिर्मित राजपुत्र

(छ) घुड़ + सवार धन + रहित

शोक + आकुल बाल + हठ

(ज) जाना स्थान का नाम

मृदा मातृभूमि

स्वर्ण नींद

(झ) 1. परीक्षा का परिणाम आने के कारण राहुल व्यथित था।

2. तत्काल ही महानिदेशक ने पुलिस अधिकारियों को बुलाया।

3. बारंबार भूकम्प आने से घर ढह गया।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

12. अध्ययन

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) अध्ययन आनन्द और ज्ञान प्राप्ति का साधन है

2. (iii) साथियों का

3. (iii) प्रतिकूल भोजन

4. (i) प्रात: काल का

5. (iv) उपरोक्त सभी

(ख) 1. हाँ

2. नहीं

3. हाँ

4. नहीं

(ग) 1. अध्ययन ज्ञान की वृद्धि और आनन्द की प्राप्ति का प्रधान साधन है। यह हमें भूतकाल से परिचित कराकर वही गलतियाँ दोहराने से रोकता है।

2. लिखी हुई बातों को विचारपूर्वक पूर्ण रूप से हृदय से ग्रहण करने का नाम अध्ययन है।

3. इतिहास का ज्ञान हमें भूतकाल के सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक ज्ञान का परिचय कराता है।

4. पुस्तकों द्वारा महापुरुषों के दिल खोलकर लिखे गये विचारों के सम्पर्क में आते हैं।

5. प्रत्येक स्त्री-पुरुष को अपने पढ़ने का उद्देश्य स्थिर कर लेना चाहिए। इसके लिए मुख्य बात यह है कि पढ़ना नियमपूर्वक होना, प्रात: काल एकाग्रचित्त होकर अध्ययन करना चाहिए।

• **भाषा कौशल**

(घ) कुसंग — अव्यवस्थित — उद्‌विग्न
अप्रत्यक्ष — अवनति — पतन

(ङ) छात्र स्वयं करें।

• **विचार कौशल**

(च) 1. उसका मधुर गीत सुनकर मन पुलकित हो उठा।
2. उद्‌विग्न मन से कोई कार्य नहीं करना चाहिए।
3. आत्मसंस्कार के द्वारा ही हम समाज में अन्य व्यक्तियों को संस्कार दे सकते हैं।
4. क्रिकेटर रिंकू सिंह प्रतिभासम्पन्न खिलाड़ी है।

● **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

13. नींव की ईंट

• **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) शिवम्
2. (ii) इमारत की नींव
3. (iii) देश के ऐसे दधीचियों के कारण जिनकी हड्‌डियों के दान ने ही विदेशी वृत्रासुर का नाश किया
4. (iii) सृष्टि धर्म प्रचारको की
5. (ii) इमारत के कँगूरे पर

(ख) 1. किसी इमारत की मजबूती उसकी नींव पर आधारित है।
2. भवन, मकान
प्रभा, कान्ति

(ग) 1. देश का कोई ऐसा स्थान नहीं है, शायद जहाँ कुछ ऐसे लोग नहीं हुए जिन्होंने अपना सर्वस्व देकर विदेशी आक्रांताओं का नाश किया।
2. सुंदर सृष्टि जो वैभव और स्वतंत्रता से परिपूर्ण हो बलिदान चाहती है जैसा भारतीयों ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए किया। यह आत्मोत्सर्ग ईंट का भी हो सकता है और व्यक्ति का भी आशय है भवन में ईंट लग जाती है और देश की स्वतंत्रता में मानव।
3. सुंदर समाज बनाने के लिए कुछ परिपक्व और समर्पित लोगों को शान्त शहादत देनी पड़ती है जैसे भारतीयों ने दी।

(घ) 1. लेखक ने उस ईंट ने धन्य कहा है कि जो कट-छँटकर कँगूरे पर चढ़ती है और बरबस ही लोगों का ध्यान खींच लेती है।
2. ठोस 'सत्य' सदा 'शिवम्' होता ही है किन्तु वह हमेशा सुंदरम भी हो यह जरूरी नहीं है।

3. ईसाई धर्म उन लोगों के पुण्यों का फल है जिन्होंने उस धर्म के प्रचार में अपने को अनाम शहीद कर दिया।
4. नींव की ईंट ही किसी इमारत की मजबूती की निशानी है अत: किसी लक्ष्य के संधान हेतु ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है जो लक्ष्य को समर्पित हो उन्हें किसी प्रकार का महत्त्वाकांक्षा न हो।
5. लेखक आज ऐसे नौजवानों की जरूरत बता रहा है जो खुद को चुपचाप खपा दें। वे नयी चेतना से संचालित हो और जिनमें किसी भी प्रकार की वासनाएँ और कामनाएँ न हो।
6. इस पाठ के लेखक रामवृक्ष बेनीपुरी हैं। उन्होंने नींव की ईंट उन लोगों को बताया जो मौन रहकर शहादत देना जानते हैं उन्हें किसी प्रकार की कोई अभिलाषा नहीं है जैसे नींव की ईंट जमीन में खपकर चुप रहती है।
7. नींव की ईंट ऐसे लोग हैं जो समाज के लिए समर्पित हैं और उसके लिए नि:स्वार्थ भाव से शहादत को तत्पर रहते हैं। उनकी व्यक्तिगत कामनाएँ नहीं होती हैं।

- **भाषा कौशल**

(ङ) छात्र स्वयं करें।

(च) कँगूरे हड्डी ईंट
चुनौतियाँ दलबन्दियाँ सेहरा

(छ) अर्पण + ता = अर्पणता धर्म + इक = धार्मिक
नाश + वान = नाशवान सत्य + ता = सत्यता

- **विचार कौशल**

(ज) छात्र स्वयं करें।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

14. डॉक्टर के शब्द

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (i) गोपाल से
2. (iii) गोपाल का बेटा
3. (i) लाली एक्सटेंशन
4. (iii) गोपाल ने
5. (iii) डॉक्टर ने

(ख) 1. 'डॉक्टर के शब्द' पाठ का नाम और लेखक का नाम आर०के० नारायण है।
2. डॉक्टर साहब का नाम रमन था।
3. अस्पताल की बेंच पर गोपाल का बेटा बैठा था।

4. जब उन्होंने मरीजों से भरी बेंच पर गोपाल के लड़के को इंतजार करते देखा तो उन्हें याद आया कि गोपाल के बच्चे से उसके आने का कारण पूछना है।

(ग) 1. डॉक्टर रमन की फीस ज्यादा थी और कोई यह मानना नहीं चाहता कि आखिरी समय आ गया है।

2. डॉक्टर साहब अपने मित्र के साथ खाना खाते, फिल्म देखते और देश-दुनिया की जमकर बात करते।

3. गोपाल बीमारी के कारण अपनी वसीयत लिखना चाहता था।

4. यह वाक्य डॉ० रमन ने गोपाल से कहा।

(घ) 1. शरीर की जरूरत ने मानसिक वृत्तियों को दबाया हुआ है आशय ये है कि आदमी को भूख, प्यास और शरीर की जरूरतें व्यक्ति को कुछ ओर सोचने ही नहीं देती वह उसमें ही उलझा रहता है।

2. यहाँ एक समृद्ध लोगों की बस्ती थी लेकिन यहाँ मानवीय मूल्यों दया, प्रेम, विश्वास और सत्यता नहीं थी यहाँ स्वार्थ और लूट का बोलबाला था।

- **भाषा कौशल**

(ङ) कृतज्ञता — व्यस्तता
सफलता — भलाई
कठिनता — सच्चाई

(च) चमकीला — नाटकीय
गहराई — कड़वाहट
जिगरी — योग्यता

(छ) अस्थाई — अशांत
बुराई — धुंधला
दुर्भाग्य — सायं
असंतोष — कमजोर
मृत्यु

(ज) स्वर्ण, नींद
मधुर ध्वनि, अगला दिन
प्रश्न का उत्तर, बाद
जीता रहना, परम-प्रिय

(झ) 1. भारत छोड़ो आन्दोलन में भारतीयों ने अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए कमर कस ली।

2. अत्यधिक परिश्रम से उसके चेहरे पर पसीना आ गया।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

15. रेल

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (iii) चाल
2. (ii) इंग्लैण्ड
3. (ii) मजबूरियाँ
4. (i) फौलाद

(ख) 1. रेल आग-पानी का अनूठा मेल है।
2. रेल की माँ भाप और पिता विज्ञान है।
3. उसका जन्म स्थान इंग्लैण्ड है।
4. उसका शौक देश की सेवा करने, माल ढोने और मरीजों के दु:ख हरने में है।

(ग) 1. किंतु हूँ इंसान की औलाद मैं।।
2. देख मुझको काँपती मजबूरियाँ।
3. चाल मेरी जिंदगी, मैं रेल हूँ।
4. बेतहाशा दौड़ती हूँ मोद में,
5. जिंदगी जिंदादिली का नाम है।

- **भाषा कौशल**

(घ) रेल	स्थान
औलाद	जोड़ने
मजबूरियाँ	डगर
मोद	नाम
हरूँ	जोड़
(ङ) पाबंदियाँ	आदमियों
दूरियाँ	मजबूरियाँ
यात्रियों	सीटियाँ
मरीजों	कठिनाईयाँ
दिशायें	सवारियाँ
(च) खाँसकर	नहाकर
धोकर	जोकर
खोकर	

(छ) 1. सेवा से ही मेवा मिलती है।
2. कठिनाई से आपका घर मिल सका।
3. लक्ष्य को भेदना सबकी बात नहीं।
4. जिंदगी में खुश रहना चाहिए।
5. अनूठा कार्य सभी का मन मोह लेता है।

- **कला समन्वय**

छात्र स्वयं करें।

❑

16. हिमालय की बेटियाँ

• **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (iii) उल्लास

2. (i) हिमालय

3. (iii) काका कालेलकर ने

4. (ii) सिंधु और ब्रह्मपुत्र

5. (ii) बाप और बेटी

(ख) 1. नागार्जुन नदियों को प्रेयसी और बहन के रूपों में भी देखते हैं।

2. दयालु हिमालय के पिघले हुए दिल की एक-एक बूँद न जाने कब से इकट्‌ठा हो-होकर इन दो महानदों के रूप में समुद्र की ओर प्रवाहित होती है।

3. ये माता की भाँति जनमानस का अपने जल से पालन करती हैं।

4. लेखक ने नदियों, हिमालय, घाटियाँ, जंगल, मैदानों की प्रशंसा की है।

• **भाषा कौशल**

(ग) छात्र स्वयं करें।

(घ) 1. मैं हैरान था कि यही दुबली-पतली गंगा, यही यमुना, यही सतलज समतल मैदानों में उतरकर विशाल कैसे हो जाती है।

2. जली नंगी पहाड़ियाँ छोटे-छोटे पौधों से भरी घाटियाँ, बांधुर अधित्यकाएँ, सरसब्ज उपत्यकाएँ-ऐसा है इनका लीला निकेतन।

(ङ)

विशेषण	**विशेष्य**
संभ्रांत	महिला
चंचल	नदियाँ
समतल	आँगन
घना	जंगल
मूसलाधार	वर्षा

(च) छात्र स्वयं करें।

(छ) छात्र स्वयं करें।

(ज) सतलज-शतद्रुम

रोपड़-रूपनगर

झेलम-वितस्ता

अजमेर-अजयमेरू

बनारस-काशी

• **विचार कौशल**

(झ) छात्र स्वयं करें।

❑

17. आटे की थैली में सपना

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (iii) एक अदद कार की
2. (i) आटे की एक थैली में
3. (ii) टी०वी० के नाम के प्रथम तीन अक्षर
4. (i) लेखक ने
5. (i) आटे वालों को

(ख) 1. बचपन में खाने को रोटी तो थी लेकिन जीवन सुख-सुविधाओं से पूर्ण नहीं था अर्थात् रहन-सहन और खान-पान का स्तर साधारण था।
2. लेखक और परिवार कार का लक्ष्य रखकर प्रसन्न थे कि वे बेबस नहीं हैं लेकिन बेकार अवश्य हैं अर्थात् कार खरीद नहीं सकते परन्तु योजना के तहत गिफ्ट पा सकते हैं।
3. माता जी कार-प्राप्ति हेतु साढ़े चार बजे प्रात: उठकर ईश्वर पूजा करने लगीं। टी०वी० में बापूओं और महाराजों से साक्षात्कार करतीं शायद उनसे भी कार की प्रार्थना करती हों। उनका जीवन हमारे लिये कार प्राप्त करने का अभिलाषी हो गया।
4. कल्पना और आटे की थैलियों में कार जीतने की आस ने हमें पक्का लाइसेंस दिलवा दिया था। सपने में सड़कों पर खूब कार दौड़ाओ।

(ग) यह शीर्षक एकदम उपयुक्त है। कार प्राप्ति का सपना जो एक परिवार ने देखा वो आटे की थैली की योजना में निकलना था।
कार प्राप्ति की स्कीम' 'झूठा सपना'

(घ) 1. लेखक नहा धोकर आये, माँ ने तिलक लगाया, मौली बाँधी, पत्नी ने नारियल फोड़ा, माँ ने रिबन, कैंची लेखक के पकड़ाई। लेखक ने शंख और हर्ष-ध्वनि के मध्य काँपते हाथों से थैली को काटा।
2. लेखक, आटे की थैलियों में कार निकलने की आस में सपने में सड़कों पर कार चला रहे थे। अब कार वास्तविकता में नहीं आयी थी। अत: ये सब काल्पनिक रूप में रहा। एक दिन कार वास्तव में आयेगी तो पूरा परिवार एक लॉन्ग ड्राइव पर जायेगा। हाँ बिहारी बाबू के भी जायेंगे तो थोड़ा रौब बढ़ेगा।
3. यह सब आटा कम्पनी वालों की शायद चाल होगी।
4. माँजी को पेट दर्द — लाला और श्रीमती ललाइन से दिखने लगे
कपड़े तंग — नये कपड़े सिलवाने पड़े
बिजली, पानी के बिल बढ़ गये
5. छात्र स्वयं करें।
6. छात्र स्वयं करें।

- **भाषा कौशल**

(ङ) छात्र स्वयं करें।

(च) छात्र स्वयं करें।

- **विचार कौशल**

(छ) 1. अतिरेक उत्साह में कोई कार्य करना नुकसानदायक हो सकता है।
व्यतिरेक की अवस्था में व्यक्ति कुछ ज्यादा प्रयास करता है।
2. अनेक प्रकार से हमने उसकी सहायता की।
विवेक का उदय शिक्षा से होता है।
3. ठान लो तो कोई भी कार्य कठिन नहीं है।
औरंगजेब और शिवाजी में जंग ठन गई।
4. पुरस्कार व्यक्ति में प्रोत्साहन जगाते हैं।
उपहार पाकर बच्चे प्रसन्न हो गये।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

18. चन्द्रयात्रा

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (iii) अंतरिक्ष में अत्यंत कम मात्रा में वायु होने के कारण
2. (i) 25 हजार किलोमीटर प्रति घण्टा
3. (ii) कम
4. (ii) 102 घण्टे 46 मिनट
5. (ii) अमेरिका

(ख) 1. टेढ़ा
2. मानव-पुत्र
3. माइकल कॉलिन्स
4. 102 46
5. अंतरिक्ष युग

(ग) 1. चंद्रमा थाली की तरह गोल है।
2. रॉकेट का पहला खण्ड जलकर अटलांटिक महासागर में गिरा।
3. अंत में अपोलो-II, 40 हजार प्रति घण्टा की रफ्तार से उड़ा।
4. अपोलो-II, को चंद्रमा पर पहुँचने में 4 दिन, 6 घण्टे 46 मिनट लगे।
5. चंद्रयात्री 24 जुलाई, सन् 1969 को पृथ्वी पर वापस लौटे।
6. भारत में केरल के थुम्बा में अंतरिक्ष केंद्र स्थापित किया गया है।

(घ) 1. चन्दामामा कभी थाली की तरह बिलकुल गोल दिखता है तो कभी हँसिए की तरह टेढ़ा।
2. अपोलो-II में तीन चंद्रयात्री बुधवार, 16 जुलाई, 1969 में सवार हुए।

3. वे विशेष प्रकार की पोशाक पहने हुए थे। वह पोशाक भीषण गर्मी व भीषण सर्दी से रक्षा कर सकती थी।

4. नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन चन्द्रतल पर उतरे। उन्होंने पहले अमेरिका और राष्ट्रसंघ के झंडे गाड़े।

5. चंद्रमा पर हवा नहीं है इसलिए झंडे नहीं फहरे।

- **भाषा कौशल**

(ङ) 1. परन्तु 2. त्यों ही 3. और 4. अत: 5. कि

(च) महामानव सज्जन
महाराजा सवार
महापुरुष सरगम

(छ) बहुरुपिया बहुरूप
दर्शक दर्श
ऐतिहासिक इतिहास
वैज्ञानिक विज्ञान
अमेरिकी अमेरिका
चमकीला चमक

- **विचार कौशल**

छात्र स्वयं करें।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

19. चेतक

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) हवा से
2. (iii) मुड़ जाता था
3. (iii) बैरी समाज
4. (iv) ये सभी

(ख) 1. राणा प्रताप के घोड़े का नाम चेतक था।
2. राणा प्रताप के घोड़े से हवा का पाला पड़ गया था।
3. वह सवार को लेकर उड़ जाता था अर्थात् राणा को लेकर सरपट दौड़ जाता था।
4. चेतक के प्रभाव से भाला गिर गया, तरकश गिर गया, टापों से शरीर घायल हो गया। शत्रु समाज घोड़े का ऐसा रूप देखकर दंग रह गया।

(ग) चौकड़ी भर-भरकर, चेतक बन गया निराला था
प्रताप के घोड़े से, पड़ गया हवा का पाला था।

(घ) चेतक निराला रंग
राणा प्रताप कोड़ा पुतली
बैरी दंग
उड़ मुड़ चौकड़ी

- **भाषा कौशल**

(ङ) काया — देह
अम्बर — व्योम
पवन — वायु
वारिधर — जलद

(च) छात्र स्वयं करें।

(छ) 1. पाक सैनिकों का पाला भारतीय सैनिकों से पड़ा तब उन्हें वीरता का पता चला।
2. चेतक आसमान का घोड़ा था।
3. रामलाल इतनी गति से काम करता है कि पुतली फिरी नहीं और काम हो गया।

- **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

❑

20. खानपान की बदलती तस्वीर

- **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (ii) फास्ट फूड
2. (iii) पाव भाजी
3. (ii) एथनिक
4. (ii) खरबूजे के
5. (ii) बंगाल

(ख) 1. खानपान की मिश्रित संस्कृति से लेखक का आशय है कि दक्षिण भारत का इडली डोसा, बंगाल की मिठाइयाँ, गुजरात का ढोकला और उत्तर भारत, दाल, रोटी, साग, कढ़ी का मिश्रण अब पूरे भारत में मिलता है और लोकप्रिय है। हमारे घर में इडली, डोसा, बंगाली मिठाइयाँ, ढोकला चाव से खाया जाता है।

2. खानपान के बदलाव से गृहिणियों और कामकाजी महिलाओं को अब जल्दी तैयार होने जाने वाले विविध व्यंजनों की विधियाँ उपलब्ध हैं। लेखक स्वास्थ्य के लिहाज से बदलाव से चिंतित है।

3. स्थानीय व्यंजन वे हैं जो हम परम्परागत रूप से प्रयोग करते आ रहे हैं जैसे उत्तर भारत में दाल, रोटी, साग, कढ़ी, राजमा आदि।

- **भाषा कौशल**

(ग) 1. सीना-पिरोना आना लड़कियों के लिए जरूरी है, ससुराल में इसकी जरूरत पड़ती है।

2. किसी को भला-बुरा मत कहिए पता नहीं कब उससे काम पड़ जाये।

3. चलना-फिरना जरूरी है उससे स्वास्थ्य सही रहता है।

4. लंबा-चौड़ा आदमी देख चोर डर गये।

5. वो अद्‌भुत को अपशब्द कह रहा था अत: कहा-सुनी हो गई।

6. राणा-प्रताप के परिवार ने घास-फूस खायी लेकिन अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।

(घ) छात्र स्वयं पढ़े।

• **विचार कौशल**

(ङ) छात्र स्वयं चर्चा करें।

• **जीवन कौशल एवं मूल्य**

छात्र स्वयं करें।

• **कला समन्वय**

छात्र स्वयं करें।

❑

21. विज्ञापन ही विज्ञापन

• **विषय संवर्द्धन**

(क) 1. (iv) लाल डिब्बे में बंद बेबी मिल्क की

2. (iii) लीवर सॉल्ट

3. (i) नेतागिरी

4. (iv) इन सभी से

5. (iv) इन सभी में

(ख) 1. विज्ञापनों से नहीं बच सकते हैं।

2. घर में बंद होकर बैठ जाएँ तो विज्ञापन रोशनदानों के रास्ते हवा में तैरने आते हैं—क्या आज आपने दाँत साफ किये हैं।

3. दोराहे, चौराहे पर, अखबार में, बस में विज्ञापन देखने को मिल सकते हैं।

(ग) 1. लेखक को चाय, तेल और सिरदर्द की टिकियों के विज्ञापन सुनने को मिलते हैं।

2. उसके पतले सफेद दाँतों को देखकर लेखक को लगता है कि वह विशुद्ध क्लोरोफिल मुस्कराहट, मुस्करा रहा है।

3. देश के मंदिर, खंडहर लोगों में यातायात के प्रति रुचि जाग्रत करें।

4. ब्रिटेन में किस प्रेस की छपाई अच्छी है।

5. लेखक ने दिमाग में हर जगह और चीज में विज्ञापन और उसकी संभावना नजर आती है।

6. विष्णु के मंदिर खड़े होंगे जिनमें संगमरमर की सुंदर प्रतिमा के नीचे पट्टी लगी होगी—इस मूर्ति और इस भवन के निर्माण का श्रेय लाल हाथी के निशान वाले निर्माताओं को है।

7. छात्र स्वयं करें।

8. आधुनिक युग में किसी भी उत्पाद की बिक्री बढ़ाने हेतु विज्ञापन पर खूब पैसा खर्च किया जाता है। आजकल तो सरकार और पार्टियाँ ही विज्ञापन पर खूब धन लुटा रही हैं।

- **भाषा कौशल**

(घ) 1. कर्म कारक 2. कर्म कारक
3. संप्रदान कारक 4. कर्म कारक

- **विचार कौशल**

(ङ) छात्र स्वयं करें।

❑

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-1

(क) 1. (iii) सरस्वती
2. (ii) जामुन
3. (iii) लेखक
4. (ii) दुर्योधन

(ख) 1. सहनशीलता, दया आदि शक्तिशाली को शोभा देती है।
2. सेठ ने अपनी चारों रोटियाँ भूखे और बेदम कुत्ते को खिला दी और स्वयं भूखे रहकर केवल पानी पी लिया।
3. अरुणा और चित्रा सहेलियाँ हैं।
4. चित्रा के विदेश जाने का उद्देश्य अच्छी चित्रकारी सीखना था।
5. शशि बहुत भूखा था उसकी ताई ने उसे रोटी नहीं दी थी।

(ग) 1. कवि ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है।
2. कवि ईश्वर से अज्ञान को हटाकर ज्ञानी रूपी झरने को बहाने की प्रार्थना कर रहा है। अंधकार के स्थान पर जग में उजियारा करने की प्रार्थना कर रहा है।
3. हृदय के लिए उर शब्द का प्रयोग हुआ है।
4. काव्यांश के रचयिता सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हैं।

(घ) आपका पता मेरे पास था अत: घर मिल गया।
वह मेरे पास क्यों आया पता नहीं।
रसभरी रसीली थी।
उसकी बातें रसिक की तरह हैं।
पौधे में तना होता है।
उसको एक पौधे का तना लाने को कहा।
व्यक्ति काम से ज्यादा फल की इच्छा करता है
हर व्यक्ति को अपने काम का फल मिलता है।

(ङ) छात्रवृत्ति मुक्ति नाश
उपस्थित करना आदेश निर्णय

(च) विभागीय साहित्यिक
सफलता सम्बन्धित

(छ) उत्तर (प्रश्न का उत्तर) बाद का
अपनाना ग्रहण जैसे सूर्य, चन्द्र
क्रम पैर
जोड़ दो शब्दों का मेल जैसे विद्या + आलय
शर-निषंग प्रश्न-उत्तर
बलवान राम-सीता

(झ) छात्र स्वयं समझें।

❑

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-2

(क) 1. (iii) साथियों का
2. (ii) शिवम्
3. (iii) गोपाल का बेटा
4. (iii) उल्लास

(ख) 1. नदियों के पानी को जीने के लिए उसी तरह जरूरी है जैसे माँ का दूध।
2. वजन बढ़ गया, बिजली, पानी का बिल बढ़ गया।
3. भाप माता और पिता विज्ञान हैं।
4. चंद्रमा का आकार कभी गोल कभी हँसिये जैसा टेढ़ा हो जाता है।
5. स्थानीय स्तर पर जो खाने-पीने की वस्तुएँ परम्परागत रूप से प्रयोग की जाती हैं जैसे उत्तर भारत में दाल रोटी, साग, कढ़ी इत्यादि।

(ग) 1. विज्ञापनों से नहीं बच सकते।
2. घर में बंद होने पर विज्ञापन रोशनदानों से आयेंगे।
3. दोराहे, चौराहे, बस, अस्पताल जैसी जगहों पर देखने को मिल जायेंगे।

(घ) कुसंग अव्यवस्थित अशान्त
अप्रत्यक्ष अवनति पतन

(ङ) दिनचर उपयोगी विचारवान
चमत्कारी प्रतिभावान अध्ययनशील

(च) **रेल**
औलाद स्थान
मजबूरियाँ जोड़ने

मोद	डगर
हँरू	नाम
	जोड़
(छ) पाबंदियाँ	आदमियों
दूरियाँ	मजबूरियाँ
यात्रियों	सीटियाँ
मरीजों	कठिनाईयाँ
दिशाएँ	सवारियाँ

(ज) 1. सत्संग से व्यक्ति सज्जन बनता है।
2. कठिनाई के वक्त धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए।
3. लक्ष्य पर नजर गड़ाये रखें सफलता तभी मिलेगी।
4. जिंदगी सुख दुख का संगम है।
5. अनूठा संसार है, कहीं धूप कहीं छाँव है।

❑